अतिथि सम्पादक की कलम से

त्रिलोक सिंह ठकुरेला

पाणिनीय शिक्षा में छंद एक महत्वपूर्ण अंग माना गया है ।
छंदों का माधुर्य एवं संगीतात्मक लय श्रोताओं एवं पाठकों को अपने आकर्षण में बांधकर रखते हैं। छंद ही रचनाकार के भावों को पद्यात्मक स्वरूप प्रदान करते हैं। यह कहना सर्वदा उचित है कि छंद ही काव्य को स्थायित्व प्रदान करते हैं। श्रीमद भागवतपुराण के अनुसार मूलतः सात छंद माने गये हैं - गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप और जगती। कालांतर में काव्य को और अधिक लालित्यपूर्ण, प्रभावशाली तथा विविधतापूर्ण बनाने के लिए भारतीय वांग्मय में अनेकानेक छंदों की रचना की गयी है। आचार्य पिंगल द्वारा छन्दःशास्त्र (छंदःसूत्र) की रचना की गयी, जिसमें विभिन्न छंदों का वर्णन किया गया है। अनेक विद्वान आचार्य पिंगल को पाणिनि का छोटा भाई मानते हैं। छंदःशास्त्र आठ अलग अलग अध्यायों में विभक्त है। आठवें अध्याय में आचार्य पिंगल ने छंदों को संक्षेप करने तथा उनके वर्गीकरण के बारे में लिखा है।

छंदों को उनकी मात्रिक एवं वर्णों की गणना के आधार पर दो भागों में विभक्त किया गया है- मात्रिक छंद एवं वर्णिक छंद या वृत्त। मात्रिक छंदों में मात्राओं की संख्या निर्धारित रहती है, जबकि वर्णिक छंदों या वृत्तों में वर्णों की संख्या तथा क्रम निर्धारित रहता है। मात्रिक एवं वर्णिक छंदों के अनेक विभेद हैं।

मात्रिक छंदों में कुण्डलिया छंद का अपना महत्व है। कुण्डलिया दोहा और रोला छंदों के मेल से बना एक संयुक्त छंद है। पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में अपने अध्ययन के समय गिरिधर की कुण्डलियाँ पढ़ते हुए इस छंद से मेरा परिचय हुआ। यह कहना उचित होगा कि यह मेरे प्रिय छंदों में से एक है जिसने मेरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। सन 2013 में राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर से मेरा कुण्डलिया संग्रह 'काव्यगंधा' प्रकाशित हुआ। मेरे लिए यह गौरव की बात है कि 'काव्यगंधा' को साहित्य जगत में खूब सम्मान मिला है। 'काव्यगंधा' से विभिन्न कक्षाओं की अनेक पाठ्यपुस्तकों में कुण्डलियाँ सम्मिलित की गयी हैं। इस छंद को और अधिक विस्तार देने के लिए मैंने कुण्डलिया छंद के सात हस्ताक्षर, कुण्डलिया कानन, कुण्डलिया संचयन, कुण्डलिया छंद के नये शिखर, अभिनव कुण्डलिया और समकालीन कुण्डलिया शतक का सम्पादन किया। यह सुखद है कि रचनाकारों एवं पाठकों द्वारा इन कृतियों को भरपूर स्नेह मिला। इस हेतु मैं सम्मिलित कुण्डलियाकारों एवं पाठकों का हृदय से आभारी हूँ। कुण्डलियाकारों के सहृदयतापूर्वक सहयोग के बिना यह कभी संभव नहीं हो पाता। मेरे सम्पादन में एक और कुण्डलिया संकलन 'कुण्डलिया कौस्तुभ' ने आकार लिया है, जो अभी अप्रकाशित है। आशा है, यथासमय 'कुण्डलिया कौस्तुभ' पाठकों के समक्ष होगा। हर्ष का विषय है कि आज कुण्डलिया छंद के पचास से अधिक संग्रह और संकलन पाठकों के लिए उपलब्ध हैं । अनेक रचनाकारों एवं सम्पादकों द्वारा आज कुण्डलिया छंद पर उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है।

यह पत्रिकाओं के सम्पादकों का असीम स्नेह ही है कि मुझे डा. रामकुमार घोटड़ के प्रधान सम्पादन में प्रकाशित पत्रिका 'सारा' तथा डा. प्रेम स्वरूप त्रिपाठी के प्रधान सम्पादन एवं चक्रधर शुक्ल के सह-सम्पादन में प्रकाशित पत्रिका 'दि अण्डरलाइन' के कुण्डलिया विशेषांकों के अतिथि सम्पादन का उत्तरदायित्व दिया गया।
साहित्य रत्न के इस कुण्डलिया विशेषांक को आपको समर्पित करते हुए मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। अभी कुछ दिन पूर्व डा. बिपिन पाण्डेय से मोबाईल पर वार्ता के समय अचानक उन्होंने कहा कि आप साहित्य रत्न के संस्थापक श्री सुरजीत जी से बात करके साहित्य रत्न के कुण्डलिया विशेषांक का सम्पादन क्यों नहीं करते। मैंने उन्हें कहा कि आपका सुझाव अच्छा है किन्तु आप ही साहित्य रत्न के कुण्डलिया विशेषांक का सम्पादन करें तो उत्तम रहेगा। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि डा. बिपिन पाण्डेय साहित्य रत्न के कुण्डलिया विशेषांक का अतिथि सम्पादक का उत्तरदायित्व संभालें किन्तु उन्होंने साधिकार कहा कि साहित्य रत्न के कुण्डलिया विशेषांक का प्रकाशन आपके (त्रिलोक सिंह ठकुरेला) अतिथि सम्पादन में होना चाहिए। अन्ततः साहित्य रत्न के संस्थापक एवं प्रधान सम्पादक श्री सुरजीत मान जलईया सिंह से बात की गयी। उनकी सहर्ष अनुमति का परिणाम है कि साहित्य रत्न का कुण्डलिया विशेषांक आज आपके समक्ष है।

इस विशेषांक के प्रकाशन का पूरा श्रेय डा. बिपिन पाण्डेय, श्री सुरजीत मान जलईया सिंह तथा विशेषांक में सम्मिलित सभी कुण्डलियाकारों सहित उन सभी को जाता है, जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस विशेषांक के प्रकाशन में सहयोगी रहे हैं। समयाभाव के कारण यदि इस विशेषांक में कुछ त्रुटियां रह गयी हों तो उनका उत्तरदायित्व मेरा है। मुझे पूर्ण विश्वास है, पाठकों द्वारा सदाशयता पूर्वक मेरी कमियाँ बताई जायेंगी। पाठकों के बहुमूल्य सुझाव सम्पादक एवं पत्र पत्रिकाओं में निखार लाने में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं।

शुभ कामनाओं सहित,

त्रिलोक सिंह ठकुरेला

(अतिथि सम्पादक)